ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा कोविड -१९ में शैक्षिक संस्थाओं के समाधान हेतू किये जा रहे शैक्षिक कार्यक्रमों का विवेचन

डॉ० बी० एल० जैन
शिक्षा विभागाध्यक्ष, जैन विश्व भारती, संस्थान, लाडनू (राज०)

अलकेश गुप्ता
पी.एच.डी. शोधार्थी, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राज०)

सारांश - कोविड-१९ हाल ही में खोजे गये कोरोना वायरस के कारण होने वाला संक्रामक रोग है इस नये वायरस और बीमारी के बारे में दिसम्बर २०१९ में चीन के वुहान में इसके प्रकोप की शुरूआत होने से पहले इसके बारे में कोई नहीं जानता था। परन्तु इस बीमारी का प्रकोप सम्पूर्ण विश्व में इस तरह छा गया कि ना चाहते हुये भी पूरी शिक्षण व्यवस्था अस्त -व्यस्त हो गई। शिक्षा प्रत्येक देश के आर्थिक सामाजिक स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय विषय का महत्वपूर्ण तत्व है। भारत में लगभग ३२ करोड छात्र छात्राओं ने लॉकडाउन के दौरान विद्यालय एवं महाविद्यालय में जाना बन्द कर दिया। राज्य एवं केन्द्र सरकारों ने सभी शैक्षणिक गतिविधियों पर अस्थाई रोक लगा दी एवं एक नई शिक्षा नीति ऑनलाइन शिक्षा पर बल दिया। शिक्षा के क्षेत्र में अचानक से हुये इस परिवर्तन की वजह से छात्र छात्राओं अभिभावकों शिक्षकों के समक्ष एक चुनौती बन कर उभरी है। संयुक्त राष्ट्र के आंकडों के मुताबिक कोविड-१९ के प्रसार से पहले ही ५ में से एक बच्चा स्कूल से बाहर था। कोविड के कारण स्कूलों के बन्द होने से खास तौर पर महामारी के पूर्व शिक्षा में भेदभाव और बहिष्करण का सामना करने वाले समूह के छात्रों को नुकसान पहुँचा है। कोविड -१९ के कारण विद्यालय में विद्यार्थियों के आने तथा कक्षा शिक्षण न होने के कारण घर पर शिक्षण की निरन्तरता बनाये रखने के लिये अप्रैल २०२० में विद्यार्थियों को घर पर ही डिजिटल माध्यम से अध्ययन सामग्री पहुंचायी जा रही है।

शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम इसके तीन ध्रुव हैं। शिक्षा जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का एक सशक्त माध्यम है। यह शिक्षकी की नैसर्गिक प्रवृतियों का शोधन और मार्गान्तीकरण करके उसे समाज का सक्रिय सदस्य बनाती है। जिससे वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक कर सकता है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

ज्ञान का प्रत्यक्षीकरण कराने वाला शिक्षक ही है जिसकी शिक्षण कला व व्यक्तित्व विद्यार्थी के व्यवहार में वांछित परिवर्तन ला सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में एक ऐसी ही महामारी का प्रकोप सम्पूर्ण विश्व में इस तरह छा गया है कि ना चाहते हुये भी पूरी शिक्षण व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गई है और वह कोई और बीमारी नहीं बल्कि उसका नाम है कोविड-१९

कोविड -१९ हाल ही में खोजे गये कोरोना वायरस के कारण होने वाला संक्रामक रोग है इस नये वायरस और बीमारी के बारे में दिसंबर २०१९ में चीन के वुहान में इसके प्रकोप की शुरूआत होने से पहले इसके बारे में कोई नहीं जानता था।

संयुक्त राष्ट्र के आंकडों के मुताबिक कोविड-१९ के प्रसार से पहले ही ५ में से एक बच्चा स्कूल से बाहर था। कोविड के कारण स्कूलों के बंद होने से खास तौर पर महामारी के पूर्व शिक्षा में भेदभाव और बहिष्करण का सामना करने वाले समूह के छात्रों को नुकसान पहुंचा है।

ह्यूमन राइट्स वॉच ने कहा कि सरकारों को चाहिये कि २०३० तक सभी बच्चों के लिये समावेशी गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति की गारंटी करने वाले संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों के तहत २०१५ में की गई अपनी प्रतिबद्धताओं पर तुरन्त अमल करें उन्हें पढाई छूटने के खतरे या बाधाओं का सबसे ज्यादा सामना कर रहे बच्चों की स्कूल वापसी पर पूरा जोर लगाना चाहिये।

सरकारों और स्कूलों को इसका विश्लेषण करना चाहिये कि किसने स्कूल छोडा और कौन वापस आया और सुनिश्चित करना चाहिये कि स्कूल वापसी कार्यक्रम पढाई छोडने वाले सभी बच्चों की खोजबीन करें साथ ही इसके लिये उन्हें वित्तीय और सामाजिक सुविधायें प्रदान करनी चाहिये।

इसी क्रम में राजस्थान सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में सभी छात्रों तक शैक्षिक सामग्री पहुंचाने हेतु अनेकों कार्यक्रम शुरू किये गये ताकि कोई भी छात्र छात्रा शिक्षा से वंचित न रहे। कोविड -१९ के कारण विद्यालय में विद्यार्थियों के आने तथा कक्षा शिक्षण न होने के कारण घर पर शिक्षण की निरंतरता बनाये रखने के लिये अप्रैल २०२० से विद्यार्थियों के आने तथा कक्षा शिक्षण न होने के कारण घर पर शिक्षण की निरंतरता बनाये रखने के लिये अप्रैल २०२० से विद्यार्थियों को घर पर ही डिजिटल माध्यम से अध्ययन सामग्री पहुंचायी गई।

शैक्षिक समस्याएं -

१. विद्यालयों का पूर्णतः बंद होना।
२. विद्यार्थियों के शिक्षा के अधिकार में असमानता में वृद्धि ।
३. माता -पिता के विस्थापन की समस्या।
४. माता -पिता के सहयोग की कमी।
५. परिवार के आय के कारण ऑनलाइन साधनों की कमी।
६. लर्निंग गेप की समस्या।
७. इन्टरनेट की पहुंच की समस्या।
८. घरेलु जिम्मेदारी का बढना।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

९. दिव्यांग/निःशक्त बच्चों की समस्या।

१०. शिक्षकों के पास भी संसाधनों का अभाव।

११. बढती हुई उम्र के साथ अध्ययन से मोह भंग होना।

१२. बाल अपराधों में वृद्धि।

१३. बालिकाओं का शिक्षा के क्षेत्र में पिछडना।

१४. शिक्षा बजट में कमी।

१५. मध्यान्ह् भोजन योजना के क्रियान्वयन में व्यवधान उत्पन्न होना।

।द्ध स्माइल कार्यक्रम –

छात्रों के अध्ययन की प्रतिपुष्टि निरंतरता एवं व्यापक पहुंच के लिये स्माइल कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया जो कि कक्षा १ से ८ तक के विद्यार्थियों के लिये गृह कार्य पर आधारित है। सप्ताह में कक्षा १ से ५ के लिये एक बार सोमवार तथा कक्षा ६ से ८ के लिये दो बार सोमवार एवं बुधवार को विद्यार्थियों तक पहुंचाया गया है। जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल संसाधन नहीं हैं संस्था प्रधान उन विद्यार्थियों तक गृहकार्य पहुंचाने एवं पुनः संकलित करने की व्यवस्था की इस हेतु विद्यार्थी अपने अभिभावकों के साथ कोविड की गाइडलाइन की पालना करते हुये विद्यालय आकर भी उक्त गृह कार्य सामग्री लेकर गये।

ठद्ध आओ घर से सीखें कार्यक्रम

छात्रों के अध्ययन की निरंतरता बनाये रखने हेतु सरकार द्वारा आकाशवाणी दूरदर्शन एवं इंटरनेट के माध्यम से व्यापक विद्यालय शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर के ईटी प्रभाग द्वारा होनहार राजस्थान की परिकल्पना को साकार करने के क्रम में आओ घर से सीखें कार्यक्रम के तहत रेडियो पर शिक्षा वाणी दूरदर्शन पर शिक्षा दर्शन इंटरनेट के माध्यम से स्माइल कार्यक्रम शुरू किया गया है जिसके तहत कक्षावार समय सारणी बनाकर अध्ययन सामग्री छात्र छात्राओं के घरों तक पहुंचायी जा रही है।

ब्द्ध होनहार राजस्थान कार्यक्रम

विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सतत सुधार लाने के लिये राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् ने होनहार राजस्थान कार्यक्रम के तहत कार्य पुस्तिकाओं का निर्माण किया है। इन कार्यपुस्तिका से विद्यार्थियों के अभिभावकों के मार्गदर्शन में पढाई के साथ सहयोग मिलेगा। जिसमें सीख साथी समर्थ शीर्षक से तीन कार्य पुस्तिकाओं का निर्माण किया गया है इन कार्य पुस्तिका में विभिन्न गतिविधियों एवं चित्रों का समावेश करते हुये आकर्षक बनाया गया है इनकी मॉनिटरिंग की जिम्मेदारी अभिभावक के साथ साथ अध्यापक की भी होगी।

क्द्ध मिशन समर्थ कार्यक्रम

विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिये शिक्षा विभाग ने मिशन समर्थ के माध्यम से घर से ही पढाई करवाने का उद्देश्य रखा है। इसके तहत सीडब्ल्यूएसएन ;बैंछद्ध बच्चों को अलग से व्हाट्सअप ग्रुप

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

बनाये जायेंगे इन ग्रुपों में प्रतिदिन ऑडियो व वीडियो सामग्री पहुंचायी जायेगी। सरकार द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों के लिये बडे स्तर पर ब्रेल लिपि व साइन लैग्वेज की कक्षा १ से १२ तक के लिये ई कटेंट तैयार किये गये हैं।

म्द्ध वीडियो लाइब्रेरी

मूक बधिर सहित अन्य श्रेणी के विकलांग विद्यार्थियों के लिये एक वीडियो लाइब्रेरी भी तैयार करवाई गई है इसमें कक्षा १ से १२ तक के बच्चों को यदि कोई भी शंका हो तो वह एक क्लिक कर पूरी जानकारी हासिल कर सकते हैं।

थ्द्ध स्वयं पोर्टल

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ;डभ्त्क्द्ध द्वारा शुरू किया गया यह ऑनलाइन लर्निंग पोर्टल है। स्वयं पोर्टल को शिक्षा की नीति के तीन आधार भूत सिद्धान्तों पहुंच, निष्पक्षता, गुणवत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से बनाया है। इस पर सभी कोर्स निःशुल्क उपलब्ध है।

ळद्धदीक्षा पोर्टल

यह एक ई-लर्निंग पोर्टल है जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय ;डभ्त्क्द्ध द्वारा छात्रों और शिक्षकों के बीच सहज और परेशानी मुक्त बातचीत को सक्षमक रने के लिये शुरू किया गया है। इसी पोर्टल पर शिक्षकों के शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम भी तैयार किया है और शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण भी लिया गया है।

भ्द्ध ई -पाठशाला

शिक्षा मंत्रालय ने इसके तहत कक्षा १ से १२ तक की छब्म्त्ज की पुस्तकों को ई.पाठशाला ऐप पर उपलब्ध करवाई गई है।

प्द्ध मध्यान्ह् भोजन योजना

स्कूली शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वन की दिशा में डक्ड (मध्यान्ह् भोजन योजना) एक महत्वपूर्ण घटक है। कोरोना काल में भी विद्यार्थी खाद्यान्न से वंचित न रहे इसलिये राज्य सरकार द्वारा बच्चों के अभिभावकों को सूखा राशन (तेल, मसाले) एवं खाद्यान्न (गेहूँ, चावल) वितरित करने के आदेश जारी किये गये हैं।

श्रद्धभारत नेट परियोजना

यह भारत की २.५ लाख ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी में लाने का कार्यक्रम है। इसके तहत ग्रामीण प्रशासन प्राथमिक स्तर पर ही कई सुविधाओं जैसे टेली मेडिसन टैली एजुकेशन ई-हेल्थ आदि का उपयोग कर पायेंगे। टैली एजुकेशन के माध्यम से ग्राम पंचायत स्तर पर प्रत्येक विद्यार्थी तक शिक्षा कार्यक्रमों की पहुंच सुनिश्चित हो सकेगी।

निष्कर्ष :-

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

सार रूप में कहा जा सकता है कि कोविड -१९ से शिक्षा में आने वाली समस्याओं का अध्ययन एवं उसका समाधान किया जा सकता है। ई-शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा, स्माईल कार्यक्रम, आओ घर से सीखें कार्यक्रम आदि कार्यक्रमों से शिक्षण करा कर कोरोना काल की परिस्थितियों में आसान शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन किया जा सकता है। इस अध्ययन में अभिभावकों की लैगिंग भेदभाव व बालिका शिक्षा मे भी परिवर्तन होगा।

राज्य सरकार द्वारा पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराये जाने पर कार्यक्रम के संचालन में कोई कठिनाई नहीं होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें:-

१. बेस्ट, जॉन डब्ल्यू (१९९३) : रिसर्च इन एजुकेशन नई दिल्ली प्रिन्टर्स हॉल ऑफ इण्डियन

वेबसाइट्स:-

http://www.erfonline.org/hindi/research/the_need_and_challenges-of-online-education-in-covid-19era

jagran.com/rajasthan-online-education vs offline education-online education is only option in coronavirus infection-era-21625312 html

downtoearth.org.in/hindistory/health/non-communicable-disease how-effective-ore-online-studies-in lockdown- 71066

amarujala.com/columns/blog/online-education-in-india-2020-during-lockdown-covid-19-pandemic-significan-challenges-problems-in-online-examination-system

indiaspendhindi.com/covid-19/children-forget-lessons-of-previous-classes-during-covid-lockdown-741347

dristhiias.com/hindi/daily-updates/dailynews-ediorials/covid-19-and-digital-education

hrw.org/hi/news/2021/05/17/378673

researchgate.net/publication/324702398/SHIKSHAK-SHIKSHA-SODH-PATRIKA_AN_INTERNATIONAL_JOURNAL_OF_TEACHER EDUCATION

dristhiias.com/hindi/printpdf/24million-may-drop-out-of-school-due-to-covid-19-impact-u-n

http://highereduhry.com/indenphp/drishtikon-mgz

drishtiias.com/hindi/printpdf/online-module-for-compling-out-of-school-children-कंजं

पत्र -पत्रिकाएं:-

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

१.दृष्टिकोण, उच्चतर शिक्षा, मई २०२०, सेक्टर-५ पंचकुला हरियाणा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म बना शिक्षा सेतु-पेज नं. १७ से लिया गया है।

2. SHIKSHAK SHIKSHA SHODH PATRIKA (AN INTERNATIONAL JOURNAL OF TEACHER EDUCATION) VOL. 10 (03) 2016, ISSN. 0974-0562

३. प्राथमिक शिक्षक, शैक्षिक संवाद की पत्रिका, अंक-४, अक्टूबर-२०१८ ैप्छण ०९७०.९३१२

४. भारतीय आधुनिक शिक्षा - अक्टूबर २०१८, जुलाई २०१८